वस्तुनिष्ठ प्रश्नों पर आधारित परीक्षा-1

पूर्णांक-40

निर्देश- कुल 40 प्रश्न दिये गए हैं। प्रत्येक प्रश्न का मान समान है। सही उत्तर का विकल्प प्रश्न संख्या के सामने लिखें।

1. संस्कृत में प्रातिपदिकों (क्रिया से इतर) की कितनी विभक्तियाँ होती हैं?

   (क) सात (ख) पाँच (ग) चार (घ) एक

2. कारक प्रकरण में किसका विवेचन किया जाएगा?

   (क) वाक्य बनाने के विषय में

   (ख) विभक्तियों का किन अर्थों में प्रयोग होने के विषय में

   (ग) कार्य करने के विषय में

   (घ) विशेष उद्देश्य नहीं है

3. 'कारक' का अर्थ क्या है?

   (क) करने वाले को कहते हैं

   (ख) व्याकरण नहीं है

   (ग) ऐसी वस्तु जिसका क्रिया के सम्पादन में उपयोग हो।

   (घ) क्रिया का दूसरा नाम है

4. क्रिया के सम्पादन के लिए कितने प्रकार से सम्बन्ध स्थापित होते है-

   (क) तीन प्रकार

   (ख) चार प्रकार

   (ग) पाँच प्रकार

   (घ) छः प्रकार

5. क्रिया का सम्पादक क्या कहलाता है?

(क) कर्त्ता

(ख) कर्म

(ग) करण

(घ) संप्रदान

6. क्रिया से प्रभावित होने वाले को क्या कहते हैं?

(क) कर्त्ता

(ख) कर्म

(ग) करण

(घ) संप्रदान

7. क्रिया के सम्पादन के साधन को क्या कहते हैं?

(क) कर्त्ता

(ख) कर्म

(ग) करण

(घ) संप्रदान

8. जिसके लिए क्रिया का सम्पादन होता है उसे क्या कहते हैं?

(क) कर्त्ता

(ख) कर्म

(ग) करण

(घ) संप्रदान

9. क्रिया जिससे निकले या दूर हो, उसे क्या कहते हैं?

(क) अपादान

(ख) संबंध

(ग) अधिकरण

(घ) सम्बोधन

10. क्रिया के सम्पादन का आधार क्या होता है?

(क) अपादान

(ख) अधिकरण

(ग) संबंध

(घ) सम्बोधन

11. प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा सूत्र किस विभक्ति का निर्धारण करता है?

(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) प्रथमा (घ) चतुर्थी

12. प्रथमा विभक्ति का उपयोग कहाँ-कहाँ होता है?

(क) केवल शब्द का अर्थ बतलाने

(ख) केवल लिङ्ग बतलाने के लिए,

(ग) परिमाण अथवा वचन बतलाने के लिए

(घ) उपर्युक्त सभी

13. प्रातिपदिक का अर्थ क्या है?

(क) शब्द

(ख) अक्षर

(ग) वाक्य

(घ) मात्रा

14. संस्कृत में किसी शब्द में जब तक प्रत्यय लगाकर पद न बना लिया जाय तब तक उसका अर्थ नहीं समझा जा सकता- यह किस सूत्र से स्थापित होता है?

(क) पदे पदम्

(ख) सुप्तिङन्तं पदम्

(ग) शब्दपदम्

(घ) वाक्यपदम्

15. प्रातिपदिक मूल शब्द हैं जिनमें विभक्ति नहीं लगी होती है।

(क) मालूम नहीं

(ख) गलत है

(ग) सही है

(घ) उपर्युक्त सभी

16. किन शब्दों को छोड़कर शेष शब्दों के अर्थ और लिङ्ग दोनों सदैव प्रथमा विभक्ति के द्वारा ही जाने जाते हैं?

(क) संज्ञा आदि

(ख) सर्वनाम आदि

(ग) विशेषण आदि

(घ) अव्यय आदि

17. परिमाण बतलाने के अर्थ में किस विभक्ति का प्रयोग होता है?

(क) प्रथमा

(ख) द्वितीया

(ग) तृतीया

(घ) चतुर्थी

18. वचन या संख्या बतलाने में किस विभक्ति का प्रयोग होता है? प्रथमा

(क) चतुर्थी

(ख) प्रथमा

(ग) द्वितीया

(घ) तृतीया

19. सम्बोधन में किस विभक्ति का प्रयोग होता है?

(क) सप्तमी

(ख) षष्ठी

(ग) प्रथमा

(घ) द्वितीया

20. कर्त्तरि प्रथमा का क्या अर्थ है?

(क) कर्मवाच्य वाक्यों में कर्त्ता प्रथमा विभक्ति में होता है।

(ख) भाववाच्य वाक्यों में कर्त्ता प्रथमा विभक्ति में होता है।

(ग) कर्मभाववाच्य वाक्यों में कर्त्ता प्रथमा विभक्ति में होता है।

(घ) कर्तृवाच्य वाक्यों में कर्त्ता प्रथमा विभक्ति में होता है।

21. क्रिया का पुरुष और वचन किसके अनुसार निर्धारित होता है?

(क) कर्त्ता के पुरुष और वचन के

(ख) कर्म के पुरुष और वचन के

(ग) करण के पुरुष और वचन के

(घ) संप्रदान के पुरुष और वचन के

22. कर्तुरीप्सिततमं कर्म सूत्र का सही अर्थ क्या है?

(क) "किसी वाक्य में प्रयोग किये गये पदार्थों में से जिसको कर्त्ता सबसे अधिक नहीं चाहता है उसे कर्म कहते है"।

(ख) "किसी वाक्य में प्रयोग किये गये पदार्थों में से जिसको कर्त्ता सबसे अधिक चाहता है उसे कर्म कहते है"।

(ग) "किसी वाक्य में प्रयोग किये गये पदार्थों में से जिसको कर्त्ता सबसे कम चाहता है उसे कर्म कहते है"।

(घ) कोई भी उपयुक्त नहीं है

23. कर्त्ता की चाह का अभिप्राय क्या है?

(क) कोई विशेष अभिप्राय नहीं है

(ख) यदि कोई पदार्थ कर्मादि को अभीष्टतम हो तो उसकी कर्म-संज्ञा होगी।

(ग) यदि कोई पदार्थ कर्मादि को अभीष्टतम हो परन्तु कर्त्ता को उसके प्रति अभीष्ट का भाव न हो तो उसकी कर्म-संज्ञा नहीं होगी।

(घ) कोई भी उपयुक्त नहीं है

24. 'माषेस्वश्वं वध्नाति' (उड़द के खेत में घोड़े को बाँधता है) इस वाक्य में उड़द और अश्व में से कर्म कौन है?

(क) उड़द

(ख) उड़द और अश्व

(ग) कोई नहीं

(घ) अश्व

25. 'पयसा ओदनं भुंक्ते' (दूध से भात खाता है) इस वाक्य में दूध और भात में से कौन-सा कर्मकारक है?

(क) ओदन

(ख) दूध

(ग) दूध और ओदन

(घ) कोई नहीं

26. कर्मणि द्वितीया सूत्र किसका निर्धारण करता है?

(क) कर्त्ता का

(ख) कर्म का

(ग) करण का

(घ) संप्रदान का

27. तथायुक्तं चानीप्सितम् का क्या अर्थ है?

(क) कोई विशेष अर्थ नहीं है

(ख) जो अनुचित है वह ईप्सित है

(ग) कुछ पदार्थ ऐसे भी होते हैं जो कि कर्त्ता द्वारा अनीप्सित होत हुए भी ईप्सित की तरह क्रिया से सम्बद्ध रहते हैं। उनकी भी कर्मसंज्ञा होती है।

(घ) जो ईप्सित है वह अनुचित है

28. 'ओदनं भुञ्जानो विषं भुंक्ते' इस वाक्य में कर्त्ता को 'विष' अत्यन्त अनीप्सित है, परन्तु 'ओदन' (जो भोजन क्रिया के द्वारा कर्त्ता का ईप्सिततम है) की ही तरह वह भी उस क्रिया से सटा है और ओदन भोजन के साथ उसके भोजन का भी रहना अनिवार्य है। इस उदाहरण में कौन-सा सूत्र लगेगा?

(क) अकथितं च

(ख) कर्मणि द्वितीया

(ग) 'माषेस्वश्वं वध्नाति'

(घ) तथायुक्तं चानीप्सितम्

29. अकथितं च सूत्र का सही तात्पर्य क्या है?

(क) अपादान इत्यादि के द्वारा अविवक्षित कारक अकथित कर्म कहलाता है। बहुत से ऐसे पदार्थ हैं जो कई एक धातुओं के कर्मों के साथ नियत रूप से सम्बद्ध रहते हैं और वस्तुतः ये कर्म के अतिरिक्त अन्य कारकों के अर्थ को द्योतित करते हैं। वे ही गौण कर्म के रूप में स्वीकार कर लिये जाते हैं। अतः इनके लिए द्वितीया विभक्ति का ही विधान होता है।

(ख) कोई विशेष तात्पर्य नहीं है

(ग) मालूम नहीं

(घ) उपर्युक्त व्याख्या अनुपयुक्त है

30. यह कारिका “दुह्याच्पच्दण्डरुधिप्रच्छिचिब्रूशासुजिमथमुषाम्। कर्मयुक् स्यादकथितं तथा स्यान्नीहृकृष्वहाम्” किस सूत्र के संदर्भ में कही गयी है?

(क) कर्मणि द्वितीया च सूत्र

(ख) अकथितं च सूत्र

(ग) कर्त्तरि प्रथमा सूत्र

(घ) संबोधने च सूत्र

31. अकर्मकधातुभिर्योगे देश: कालो भावो गन्तव्योऽध्वा च कर्मसंज्ञक इति वाच्यम् (वार्त्तिक) का सही अर्थ क्या है?

(क) निरर्थक है

(ख) अनावश्यक विस्तार है

(ग) अकर्मक धातुओं के योग में देश, काल, भाव और गन्तव्य मार्ग भी कर्म समझे जाते हैं।

(घ) उपर्युक्त सभी

32. अभिनिविशश्च सूत्र के अनुसार जब √विश् धातु के पूर्व 'अभि' और 'नि' उपसर्ग एकत्र रूप से आते हैं तो √विश् का आधार कर्मकारक होता है।

(क) गलत है

(ख) मालूम नहीं

(ग) सूत्र त्रुटिपूर्ण है

(घ) सही है

33. उपान्वध्याङ् वस: सूत्र के अनुसार यदि √वस् धातु के पूर्व उप्, अनु, अधि, आ में से कोई उपसर्ग आवे तो क्रिया का आधार कर्म होता है।

(क) सही है

(ख) मालूम नहीं

(ग) सूत्र त्रुटिपूर्ण है

(घ) गलत है

34. अभुक्त्यर्थस्य न वा सूत्र के अनुसार यदि उपवस् का अर्थ उपवास करना, न खाना होता है तो उपवस् का आधार कर्मसंज्ञक न होकर अधिकरण ही रहता है।

(क) मालूम नहीं

(ख) सही है

(ग) सूत्र त्रुटिपूर्ण है

(घ) गलत है

35. सकर्मक धातुएँ भी अकर्मक हो जाती हैं – यह इस नियम से पता चलता है: धातोरर्थान्तरे वृत्तेर्धात्वर्थेनोपसंग्रहात्। प्रसिद्धेरविवक्षात: कर्मणोऽकर्मिका क्रिया॥

(क) गलत है

(ख) सही और गलत दोनों है

(ग) सही है

(घ) मालूम नहीं

36. सकर्मक धातुएँ भी अकर्मक हो जाती हैं यदि, धातु का अर्थ बादल जाए, जैसे- √वह् धातु का अर्थ ढोना या ले जाना हो जाय।

(क) मालूम नहीं

(ख) गलत है

(ग) ऐसी कोई धातु नहीं होती

(घ) सही है

37. धातु के ही अर्थ में कर्म समाविष्ट हो, जैसे- 'जीवति' इस प्रयोग में 'जीवनं जीवति' इस प्रकार का अर्थ गम्य होने के कारण इसमें जीवन की कर्मता छिपी हुई है।

(क) सही है

(ख) कर्म समाविष्ट नहीं हो सकता

(ग) गलत है

(घ) मालूम नहीं

38. जब धातु का कर्म अत्यंत प्रख्यात हो, जैसे- मेघो वर्षति का कर्म 'जलम्' अत्यंत लोक विख्यात है।

(क) कर्म प्रख्यात नहीं हो सकता

(ख) सही है

(ग) गलत है

(घ) मालूम नहीं

39. जब कर्म का कथन अभीष्ट न हो, जैसे- 'हितान्न य: संशृणुते स किं प्रभु:। इस प्रयोग में 'हित' कर्म है पर उसे कर्म बतलाना कर्त्ता को अभीष्ट नहीं है अतः उसमें द्वितीया न होकर पंचमी विभक्ति हुई।

(क) गलत है

(ख) मालूम नहीं

(ग) सही है

(घ) व्याख्या अस्पष्ट है

40. अकर्मक धातुएँ प्रायः उपसर्ग से जुड़कर सकर्मक हो जाती हैं। जैसे- √धाव् धातु अकर्मक है किन्तु 'अनु' उपसर्ग इसे सकर्मक बनाता है- ऋषिणां पुनराद्यानां वाचामार्थोऽनुधावति। इसी प्रकार √वृत् √रुह् धातुओं का सकर्मकत्व द्रष्टव्य है- प्रभुचित्तमेव जनोऽनुवर्तते। अचलतुङ्गशिखरमारुरोह।

(क) गलत है

(ख) मालूम नहीं

(ग) उपसर्ग जुड़ता नहीं है

(घ) सही है